शास्त्री-III

Date 04.11.20
Page 3

भवति। अयनसंस्कृतिः स्वकस्या दिशः योगेन, पृथग्दिशोः अन्तरेण, उभयवलनयोः या संस्कृतिः सा, रसहता षट्सङ्ख्यया भक्ता सती, अङ्गुल्यः वलनदिक्-चरणाः स्युः।

भावार्थः— सूर्यग्रहण के लिये सूर्यस्पष्ट में 3 राशि को जोड़ें और चन्द्रग्रहण के लिये सूर्यस्पष्ट में से 3 राशि को घटायें। फिर उक्त सूर्यस्पष्ट में अयनांश जोड़ दें। इसके बाद पहले 6 और दूसरे 5 और तीसरे 1 खण्डों को ग्रहण करके चरसाधन की भाँति इसको सिद्ध करें, तो अंगुलादिवलन होता है। यदि अयनांशयुक्त सूर्य मेषादि हो तो उत्तर तथा तुलादि हो तो दक्षिण होता है। इसको अयनवलन कहते हैं।

मध्यनत साधन प्रकार— त्रिप्रश्नाधिकारोक्त 'यातः शेषः' इत्यादि श्लोक के आधार पर चन्द्रग्रहण के मध्यकाल में से दिनमान को घटाकर जो शेष रहे, उसको रात्र्यर्द्ध में से घटायें, शेष मध्यनत होगा। यदि ग्रहणमध्यकाल पूर्वरात्रि में हो, तो पूर्व और उत्तररात्रि में हो तो पश्चिम होता है। इसी प्रकार सूर्यग्रहण के मध्यकाल और दिनार्द्ध को घटायें शेष सूर्यग्रहण का मध्यनत होता है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

शास्त्री-III

अयनवलनाऽक्षवलनसाधनप्रकार :—

त्रिभयुतोनरविः स्वविधुग्रहेऽयनलवाढ्य
इतश्चरवद्दलैः।
नगशरेन्दुमितैर्वलनं भवेत्स्वरविदिक्खलु
मध्यनताच्च यत् ॥
विषयलब्धगुणाहतिरुक्तवद्वलनमक्षहतं पलभाहृतम्।
उदगपागिह पूर्वपरे क्रमाद्द्रसहृतोभयसंस्कृतिरङ्कभ्रयः॥

अन्वयः— स्वविधुग्रहे त्रिभयुतोनरविः अयनलवाऽऽढ्यः, इतः नगशरेन्दुमितैः दलैः चरवत् स्वरविदिक्वलनं भवेत्। अथ तु यत् मध्यनतात्, ततः विषयलब्धगुणाहतिः उक्तवत् वलनं पलभाहृतम् अक्षहृतम् इह पूर्वपरे क्रमात् उदक् अपाक् उभयसंस्कृतिः रसहृता अङ्कभ्रयः स्युः।

तद्यथा— स्वविधुग्रहे सूर्याचन्द्रमसोः ग्रहणे, क्रमेण त्रिभयुतोनरविः सूर्यग्रहे त्रिभयुतः, चन्द्रग्रहे च त्रिभहीनः सूर्यः, अयनलवाऽऽढ्यः अयनांशैर्युतः कर्तव्यः। इतः सायनसूर्यात्, नगशरेन्दुमितैः सप्तपञ्चैकतुल्यैः, दलैः खण्डैः, चरवत् यच्चरं तद्वत्, स्वरविदिग्वलनं निजस्य त्रिभयुतोनसायनसूर्यस्य वा दिग्गोलः तद् दिगायनवलनं भवेत्।

अथ तु तदनन्तरं, यन्मध्यनतात् दिनार्द्धमध्यकालयोरन्तरभूतात् मध्यनतात्, ततः विषयलब्धगुणाहतिः पञ्चभक्तात्तराश्याहतिः, उक्तवत् पूर्ववलनवद्, वलनं साध्यम्, ततः पलभाहतं अक्षच्छायागुणितम्, अक्षहृतं सद् अक्षवलनं स्यात्। इह ग्रहणे, पूर्व-परे नते क्रमात्, उदक्- अपाक् पूर्वनते- उत्तरं, पश्चिमनते दक्षिणम्, अक्षवलनं

P.T.O

गहलाघवम्

शास्त्री-III

चन्द्रग्रहणाधिकार:

Date 04.11.20
Page 1

मध्यमनतसाधनप्रकार: —

स्पर्शादिकं यदि विधोर्दिवसस्य शेषे
यातेऽथवा द्युदलतद्विवरं रवेस्तु।
रात्रेस्तदूनितनिशाशकलं क्रमात्स्यात्,
प्राक्पश्चिमं नतमिदं वलनस्य सिद्ध्यै॥

अन्वय: — अथवा यदि विधो स्पर्शादिकं दिवसस्य शेषे याते द्युदलतद्विवरं, रवे: तु, रात्रे: तदूनितनिशाशकलं, क्रमात् प्राक् पश्चिमं नतं स्यात् इदं वलनस्य सिद्ध्यै:।

तारा — अथवा किंवा, यदि विधो: चन्द्रमस:, स्पर्शादिकं स्पर्श-मध्य-मोक्षादिकं, दिवसस्य वासरस्य, शेषे समाप्तिं, याते गते सति, तदा द्युदलतद्विवरं दिनार्द्धान्तरं पश्चिमं मध्यनतं स्यात्। रवे: सूर्यस्य तु, यदि रात्रे: निशाया:, शेषे याते, तदूनितनिशाशकलं निशार्द्धान्तरं कार्यम्, इदंवलनस्य सिद्ध्यै साधनाय, क्रमात् प्राक्पश्चिमं च नतं स्यात् भवेत्।

भावार्थ:— चन्द्रग्रहण का स्पर्श सूर्यास्त से जितनी घड़ी पूर्व हो, उतनी घड़ियों को दिनार्द्ध में से घटायें। जो शेष रहे वह पूर्वमध्यनत होता है तथा चन्द्रग्रहण का मोक्ष सूर्योदय के पश्चात् जितनी घड़ी पर हो उतनी घड़ियाँ दिनार्द्ध में से घटा देने पर जो शेष रहता है वह पश्चिममध्यनत होता है।

इसी प्रकार सूर्यग्रहण का स्पर्श सूर्योदय से पूर्व जितना घड़ी पर हुआ हो उतनी घड़ियाँ रात्र्यर्द्ध में से घटायें। इससे जो शेष रहे वह पूर्वमध्यनत होता है, और सूर्यग्रहण का मोक्ष सूर्यास्त के बाद जितनी घड़ी में हो उन घड़ियों को रात्र्यर्द्ध में से घटा देने पर जो शेष रहे वह पश्चिममध्यनत होता है। यह वलन साधन के लिए किया जाता है।

डॉ० सुदियट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।